MODEL PAPER – 5

समय : 3 घंटा 15 मिनट] [पूर्णांक : 100

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

1. परीक्षार्थी OMR उत्तर-पत्रक पर अपना प्रश्न पुस्तिका क्रमांक (10 अंकों का) अवश्य लिखें।
2. परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।
3. दाहिनी ओर हाशिये पर दिये हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।
4. इस प्रश्न पत्र को धयानपूर्वक पढ़ने के लिए 15 मिनट का अतिरिक्त समय दिया गया है।
5. यह प्रश्न-पत्र दो खण्डों में है, खण्ड-अ एवं खण्ड-ब।
6. खण्ड-अ में 100 वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं, जिनमें से किन्हीं 50 प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य है। 50 से अधिक प्रश्नों के उत्तर देने पर प्रथम 50 प्रश्नों का ही मूल्यांकन किया जायगा। प्रत्येक के लिए 1 अंक निर्धारित है। इनका उत्तर उपलब्ध कराये गये OMR उत्तर-पत्रक में दिये गये सही विकल्प को नीले/काले बॉल पेन से प्रगाढ़ करें। किसी भी प्रकार के ह्वाइटनर/तरल पदार्थ/ब्लेड/नाखून आदि का OMR उत्तर-पत्रक में प्रयोग करना मना है, अन्यथा परीक्षा परिणाम अमान्य होगा।
7. खण्ड-ब में कुल 6 विषयनिष्ठ प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के समक्ष अंक निर्धारित हैं।
8. किसी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरण का प्रयोग पूर्णतया वर्जित है।

खण्ड-अ : वस्तुनिष्ठ प्रश्न

❑ प्रश्न संख्या 1 से 100 तक के प्रत्येक वस्तुनिष्ठ प्रश्न के साथ चार विकल्प दिए गए हैं, जिनमें से कोई एक सही है। इन 100 प्रश्नों में से किन्हीं 50 प्रश्नों के अपने द्वारा चुने गये सही विकल्प को OMR उत्तर-पत्रक पर चिह्नित करें। $50 \times 1 = 50$

1. 'राख से लीपा हुआ चौका'-यह पंक्ति किस शीर्षक कविता की है ?
(A) पुत्र-वियोग (B) अधिनायक (C) उषा (D) हार-जीत

2. 'रामचरितमानस' किसकी रचना है ?
(A) सूरदास (B) तुलसीदास (C) कबीरदास (D) नाभादास

3. 'जूठन' शीर्षक आत्मकथा के लेखक के बड़े भाई का नाम क्या था ?
(A) सुखवीर (B) मनमीत (C) गजोधर (D) कालीराम

4. 'भ' का उच्चारण-स्थान क्या है ?
(A) ओष्ठ (B) दंत (C) कंठ (D) मूर्द्धा

5. 'लिंग' शब्द किस भाषा का शब्द है ?
(A) तुर्की (B) फारसी (C) संस्कृत (D) अरबी

6. 'निज' शब्द का विशेषण क्या है ?
(A) नजर (B) निजी (C) निजाम (D) निर्जीव

7. 'रात को पहरा देनेवाला'-कौन पदबंध है ?
(A) संज्ञा पदबंध (B) सर्वनाम पदबंध
(C) विशेषण पदबंध (D) क्रिया पदबंध

8. 'अवगुण' शब्द में उपसर्ग कौन है ?
(A) अव (B) अब (C) अवा (D) अबे

9. भगत सिंह ने कैसी मृत्यु को सुन्दर कहा है?
(A) अपराध के बदल दी गई फाँसी
(B) देश सेवा के बदले दी गई फाँसी
(C) दुर्घटना में हुई मृत्यु
(D) उपर्युक्त सभी

10. 'सिपाही की माँ' शीर्षक एकांकी का सबसे सशक्त पात्र कौन है?
(A) बिशनी (B) मानक
(C) मुन्नी (D) इनमें से कोई नहीं

11. बिशनी और मुन्नी को किसी प्रतीक्षा है?
(A) मानक को चिट्ठी की (B) मानक के मनिआर्डर की
(C) माक के ब्याह की (D) मानके आगमन की

12. नामवर सिंह के गुरु कौन थे?
(A) हजारी प्रसाद द्विवेदी (B) रामचन्द्र शुक्ल
(C) रामवृक्ष बेनीपुरी (D) इनमें से कोई नहीं

13. नामवर सिंह ने किस पत्रिका के सम्पादक रहे हैं?
(A) धर्म युग (B) सारिका
(C) आलोचना (D) इनमें से कोई नहीं

14. 'जूठन' किनकी आत्मकथा है?
(A) मोहन राकेश (B) ओमप्रकाश बाल्मीकि
(C) मलयज (D) उदय प्रकाश

15. 'जूठन' के हेडमास्टर का नाम क्या है?
(A) कलीराम (B) काशीराम
(C) सुखदेव सिंह (D) ब्रह्म देव

16. 'हँसते हुए मेरा अकेलापन' के लेखक कौन है?
(A) मलयज (B) भगत सिंह
(C) ओमप्रकाश वाल्मीकि (D) मोहन राकेश

17. 'तिरिछ' शीर्षक कहानी के कहानीकार कौन हैं?
(A) सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'
(B) चंद्रधर शर्मा गुलेरी
(C) उदय प्रकाश
(D) प्रेमचंद

18. तिरिछ है—
(A) एक उपयोगी जन्तु (B) एक विषहीन जन्तु
(C) एक विषैला और भयानक जन्तु (D) इनमें से कोई नहीं

19. तुलसीदास कैसे कवि थे?
(A) समन्वयवादी (B) पृथकतावादी
(C) छायावादी (D) रहस्यवादी

20. भक्तमाल किसकी रचना है?
(A) नाभादास (B) सूरदास
(C) तुलसीदास (D) कबीरदास

21. भूषण किस काल के कवि है?
(A) आदिकाल (B) भक्तिकाल
(C) आधुनिक काल (D) रीति काल

22. 'सुंघनी साहू' परिवार 'किनसे सम्बद्ध था?
(A) निराला से (B) महादेवी से
(C) दिनकर से (D) जयशंकर प्रसाद से

23. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की लिखी कौन-सी कहानी नहीं है?
(A) 'उसने कहा था' (B) 'बुद्ध का काँटा'
(C) 'सुखमय जीवन' (D) 'तिरिछ'

24. कौन-से रचनाकार बिहार से सम्बन्धित नहीं है?
(A) जगदीश चन्द्र माथुर (B) जय प्रकाश नारायण
(C) रामधारी सिंह दिनकर (D) शमशेर बहादुर सिंह

25. 'कड़बक' में कौन-सी बात पायी जाती है?
(A) प्रेम की महिमा (B) ईश्वर की महिमा
(C) मनुष्य की महिमा (D) दानव की महिमा

26. 'नौ-दो ग्यारह होना' मुहावरे का अर्थ है—
(A) भाग जाना (B) छिप जाना
(C) प्रेम करना (D) सो जाना

27. 'जगदीश' का संधि-विच्छेद है—
(A) जग + दीश (B) जगत् + ईश
(C) जग + ईश (D) जगती + श

28. 'रात' का विलोम है—
(A) सुबह (B) दिन (C) सवेरा (D) दोपहर

29. 'लोक' का विशेषण बताएँ—
(A) लोकेश (B) लोकेन्द्र (C) लौकिक (D) लोकपरक

30. 'पुरुष' का विलोम है—
(A) स्त्री (B) नारी (C) महिला (D) बनिता

31. 'महोत्सव' का संधि-विच्छेद है—
(A) मह + उत्सव (B) महा + उत्सव
(C) महोत + उत्सव (D) महोत् + सव

32. 'संतोष' का संधि-विच्छेद है—
(A) संत + तोष (B) सम् + तोष
(C) सत् + तोष (D) संत् + ओष

33. 'बुराई' में कौन-सा प्रत्यय है?
(A) ई (B) राई (C) आई (D) अई

34. 'चक्रपाणि' कौन समास है?
(A) बहुव्रीहि (B) द्वन्द्व (C) द्विगु (D) तत्पुरुष

35. 'दिग्गज' किस संधि का उदाहरण है?
(A) स्वर (B) व्यंजन
(C) विसर्ग (D) इनमें से कोई नहीं

36. 'रात-दिन' कौन समास है?
(A) बहुव्रीहि (B) द्वन्द्व (C) द्विगु (D) तत्पुरुष

37. 'दूज का चाँद होना' मुहावरा का अर्थ है—
(A) प्यारा होना (B) बहुत दिन पर दिखाई देना
(C) सुन्दर होना (D) प्रेम करना

38. 'नया' का विलोम है—
(A) पुराना (B) प्राचीन (C) गंदा (D) फटा

39. 'ग्राम' का विशेषण बताएँ—
(A) ग्रामीण (B) ग्रामवासी (C) गाँव (D) गँवई

40. 'तल्लीन' का संधि-विच्छेद है—
(A) तत् + लीन (B) तत + लीन
(C) तम + लीन (D) तन् + लीन

41. 'चन्द्रमा' का पर्यायवाची शब्द है—
(A) चाँदनी (B) राजा (C) रोहित (D) शशि

42. 'गले मढ़ना' मुहावरा का अर्थ है—
(A) सुन्दर दिखना (B) तारीफ करना
(C) आरोप लगाना (D) प्रयाप करना

43. सत्संग में किनकी अभिरुचि थी?
(A) तुलसीदास (B) सूरदास
(C) कबीरदास (D) जयशंकर प्रसाद

44. 'कठोर' शब्द का विलोम होगा—
(A) कुसुम (B) कली
(C) नकुल (D) कोमल

45. काशी में कितने वर्ष रहकर तुलसीदास विद्याध्ययन किए?
(A) 10 वर्षों तक (B) 15 वर्षों तक
(C) 18 वर्षों तक (D) 20 वर्षों तक

46. शिव का उपासक कहलाता है—
(A) शिवम् (B) शैव (C) शिवत्व (D) शंकर

47. जयशंकर प्रसाद का महाकाव्य है—
(A) कामायनी (B) साकेत (C) उर्वशी (D) मुकुल

48. 'दूषित' शब्द का विलोम होगा—
(A) प्रदूषित (B) गंदा (C) स्वच्छ (D) मलिन

49. 'घिर-विषाद विलीन मन की'—किस कविता की पंक्ति है?
(A) पुत्र-वियोग (B) गाँव का घर
(C) तुमुल कोलाहल कलह में (D) हार-जीत

50. 'घर' शब्द का पर्यायवाची होगा—
(A) निकेतन (B) तामरस (C) नलिन (D) प्रभा

51. 'विराम' का शाब्दिक अर्थ क्या होता है?
(A) ठहराव (B) चाल (C) उठाव (D) क्रिया

52. 'उसने कहा था' कहानी के कहानीकार कौन है?
(A) बालकृष्ण भट्ट (B) भगत सिंह
(C) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी (D) रामधारी सिंह दिनकर

53. 'पढ़नेवाला' शब्द में प्रत्यय है—
(A) ला (B) ल (C) वाला (D) आ

54. 'कौरव' शब्द में प्रत्यय है—
(A) रव (B) आ (C) अ (D) औरव

55. 'दलविहीन लोकतंत्र' किसके मूल उद्देश्यों में है?
(A) साम्यवाद (B) मार्क्सवाद तथा लेनिनवाद
(C) समाजवाद (D) अधिनायकवाद

56. 'पवन' शब्द का संधि-विच्छेद है—
(A) पो + अन (B) प + वन
(C) पा + वन (D) प + वान

57. निम्न में से किस कहानी में 'ग्रैंग्रीन' का उल्लेख है?
(A) उसने कहा था (B) रोज
(C) तिरिछ (D) रस्सी का टुकड़ा

58. 'वह कुल्हाड़ी से वृक्ष काटता है'—कारक है—
(A) अपादान (B) सम्प्रदान (C) कर्त्ता (D) करण

59. 'आनन्दमय' शब्द कौन समास है?
(A) तत्पुरुष (B) अव्ययीभाव
(C) कर्मधारय (D) द्वन्द्व

60. गाँधीजी की झोपड़ी को ..... ने जला दिया था।
(A) ग्रामीणों (B) युवकों
(C) एमन साहब के कर्मचारियों (D) छात्रों

61. 'मुझे भी छात्रवृत्ति मिलती थी'—सर्वनाम है—
(A) पुरुषवाचक (B) निजवाचक
(C) निश्चयवाचक (D) प्रश्नवाचक

62. 'उपकार' शब्द में उपसर्ग है—
(A) उ (B) उपका (C) उप् (D) उप

63. 'सिपाही की माँ' एकांकी के लेखक कौन है?
(A) रामधारी सिंह दिनकर (B) मोहन राकेश
(C) नामवर सिंह (D) उदय प्रकाश

64. गंडक नदी का जल सदियों से—
(A) शांत रहा है (B) चंचल रहा है
(C) गर्म रहा है (D) ठंडा रहा है

65. 'सच्चिदानन्द' का संधि-विच्छेद है—
(A) सच्चिदा + नन्द (B) सच्चिद + आनन्द
(C) सच्चि + आनन्द (D) सत् + चित + आनन्द

66. लीडबेटर की नजर में जे० कृष्णमूर्ति क्या थे?
(A) राज्य शिक्षक (B) देश शिक्षक
(C) विश्व शिक्षक (D) गाँव शिक्षक

67. 'घाट-घाट का पानी पीना' मुहावरा का अर्थ है—
(A) बहुत अनुभवी होना
(B) बहुत यात्रा करना
(C) अनेक लोगों से मित्रता करना
(D) रोजगार के नए-नए अवसर तलाश करना

68. 'अशोक वाजपेयी' का मूल निवास स्थान कहाँ है?
(A) सागर, म०प्र० (B) महासागर, मद्रास
(C) हिन्द, हिन्द महासागर (D) वाराणसी, उ०प्र०

69. ज्ञानेंद्रपति ने कौन-सी कविता लिखी है?
(A) हार-जीत (B) गाँव का घर
(C) उषा (D) पुत्र वियोग

70. 'गला छूटना' मुहावरे का अर्थ है—
(A) डींग हाँकना (B) भटकना
(C) पिंड छूटना (D) परेशान करना

71. जिस पुरुष की स्त्री मर गई हो—
(A) स्त्री विहीन (B) पत्नीहीन
(C) विधुर (D) नारी विहीन

72. 'चिड़ीमार' कौन-सा समास है?
(A) तत्पुरुष (B) कर्मधारय
(C) बहुब्रीहि (D) द्वन्द्व

73. 'साहित्य लहरी' किनकी रचना है?
(A) जायसी (B) सूरदास
(C) कबीर (D) तुलसीदास

74. 'प्रगति और समाज' किनकी रचना है?
(A) बालकृष्ण भट्ट (B) नामवर सिंह
(C) दिनकर (D) चन्द्रधर शर्मा

75. 'एक लेख और एक पत्र' के लेखक है—
(A) मोहन राकेश (B) भगत सिंह
(C) उदय प्रकाश (D) अज्ञेय

76. 'उसने कहा था' शीर्षक का कहानीकार कौन हैं?
(A) चंद्रधर शर्मा गुलेरी (B) प्रेमचंद
(C) मोहन राकेश (D) यशपाल

77. निम्नांकित में कौन 'उसने कहा था' शीर्षक कहानी का नायक है?
(A) बजीरा सिंह (B) लहना सिंह
(C) बोधा सिंह (D) हजारा सिंह

78. 'उसने कहा था' किस प्रकार की कहानी है?
(A) धर्म प्रधान (B) चरित्र प्रधान
(C) भाव प्रधान (D) इनमें से कोई नहीं

79. बालकृष्ण भट्ट ने किस पत्रिका का संपादन किया?
(A) धर्मयुग (B) समालोचक
(C) काशी नगरी प्रचारिणी पत्रिका (D) हिन्दी प्रदीप

80. बालकृष्ण भट्ट की रचना 'बातचीत' है—
(A) ललित निबन्ध (B) कहानी
(C) एकांकी (D) यात्रा-संस्मरण

81. 'ओ सदानारी' के लेखक कौन है?
(A) नामवर सिंह (B) मोहन राकेश
(C) रामधारी सिंह 'दिनकर' (D) जगदीश चन्द्र माथुर

82. 'ओ सदानारी' किस नदी को निमित बनाकर लिखा गया है?
(A) गंगा (B) गंडक
(C) कोशी (D) कमला

83. 'अर्द्धनारीश्वर' निबन्ध कब प्रकाशित हुआ था?
(A) 1946 में (B) 1961 में
(C) 1958 में (D) 1952 में

84. दिनकर को किस कृति पर भारतीय ज्ञान पीठ पुरस्कार मिला था?
(A) कुरुक्षेत्र (B) उर्वशी
(C) रश्मिरथी (D) रेणुका

85. 'रोज' शीर्षक कहानी के कहानीकार कौन हैं?
(A) प्रेमचंद
(B) जयशंकर प्रसाद
(C) सच्चिदानंद हीरानन्द वात्सयायन 'अज्ञेय'
(D) इनमें से कोई नहीं

86. 'माथा ठनकना' मुहावरा का अर्थ है—
(A) भयभीत हो जाना (B) घबरा जाना
(C) हिम्मत आ जाना (D) अनिष्ट की आशंका होना

87. मोपासाँ कहाँ के थे?
(A) इंग्लैण्ड (B) फ्राँस
(C) भारत (D) बर्मा

88. 'दीवाली' शब्द संज्ञा है—
(A) जातिवाचक (B) व्यक्तिवाचक
(C) भाववाचक (D) समूहवाचक

89. 'पेशगी' के लेखक है—
(A) अंतोन चेखव (B) गाइ-डि-मोपासाँ
(C) दिनकर (D) हेनरी लोपेज

90. अर्थ के आधार पर वाक्य के मुख्यतः कितने भाग है?
(A) तीन (B) चार
(C) छह (D) आठ

91. 'वह घर नहीं जाएगा' वाक्य है—
(A) निषेधवाचक (B) आज्ञावाचक
(C) प्रश्नवाचक (D) संदेहवाचक

92. 'चेखव एक अतुलनीय कलाकार है' ऐसा किसने कहा?
(A) लोपेज (B) लेव तोल्सतोय
(C) दिनकर (D) सभी ने

93. 'अनुभव' शब्द है—
(A) स्त्रीलिंग (B) पुंल्लिग
(C) उभयलिंग (D) इनमें से कोई नहीं

94. 'मनोविनोद' शब्द कौन लिंग है?
(A) पुंल्लिग (B) स्त्रीलिंग
(C) उभयलिंग (D) इनमें से कोई नहीं

95. 'एक गिलास पानी लाओ' वाक्य है—
(A) प्रश्नवाचक (B) विस्मयादिबोधक
(C) आज्ञावाचक (D) इच्छावाचक

96. 'अर्द्धनारीश्वर' का किस विद्या से संबंध है?
(A) निबंध (B) कहानी
(C) एकांकी (D) व्यंग्य

97. 'रवीन्द्र' का संधि-विच्छेद है—
(A) रवि + इन्द्र (B) रवि + ईन्द्र
(C) रव + इन्द्र (D) रवि + ऐन्द्र

98. जानने की इच्छा रखने वाले को कहते है—
(A) जिज्ञासा (B) जिज्ञासु
(C) जिजीविषा (D) जानकार

99. जयशंकर प्रसाद किस वाद से संबंधित रचनाकार है?
(A) छायावाद (B) प्रगतिवाद
(C) प्रयोगवाद (D) नई कविता

100. 'कवितावली' के रचनाकार है—
(A) जायसी (B) तुलसीदास
(C) कबीरदास (D) सूरदास

खण्ड-ब : विषयनिष्ठ प्रश्न

1. किसी एक पर निबंध लिखें— 1 × 8 = 8

(i) मेरी सबसे प्रिय ऋतु (बसन्त ऋतु)
(ii) बिहार दिवस (iii) परोपकार
(iv) छठ पूजा (v) शहरी जीवन
(vi) स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त)

2. किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या करें— 2 × 4 = 8

(क) जिस पुरुष में नारीत्व नहीं, अपूर्ण है।

(ख) बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है और बिना लड़े सिपाही। मुझे तो संगीन चढ़ाकर मार्च का हुक्म मिल जाय। फिर सात जर्मन को अकेला मारकर न लौटूँ तो मुझे दरबार साहब की देहली पर मत्था टेकना नसीब न हो।

(ग) प्रतिभट कटक कटीले केते काटि काटि,
कालिका सी किलकि कलेऊ देति काल की।

(घ) "जादू टूटता है इस उषा का अब सूर्योदय हो रहा है।"

3. अपने क्षेत्र में कानून और व्यवस्था की बिगड़ती हुई स्थिति पर दैनिक पत्र के संपादक को पत्र लिखिए। 1 × 5 = 5

अथवा,

अपने प्रधानाचार्य को आवेदन-पत्र लिखकर अपना मासिक शुल्क (कम करने) माफ करने की प्रार्थना कीजिए।

4. निम्न प्रश्नों से किन्हीं पाँचों के उत्तर 50–70 शब्दों में दें। 2×5=10

(i) सूबेदार और उसका बेटा लड़ाई में क्यों गये ?
(ii) बिशनी और मुन्नी को किसकी प्रतीक्षा है? वे डाकिए की राह क्यों देखती हैं ?
(iii) डायरी का लिखा जाना क्यों मुश्किल है ?
(iv) नारी की पराधीनता कब से आरम्भ हुई ?
(v) अगर हममें वाक्शक्ति न होती तो क्या होता?
(vi) प्रगीत क्या है?
(vii) हरचरना अधिनायक के गुण क्यों गाता है?
(viii) कबीर कानि राखी नहीं' से क्या तात्पर्य है ?
(ix) कवि जयशंकर प्रसाद का जन्म कब हुआ था?
(x) सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म कहाँ हुआ था?

5. निम्न प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर 150–250 शब्दों में दें। 3 × 5 = 15

(i) ओमप्रकाश वाल्मीकि की रचना 'जूठन' का सार-सारांश प्रस्तुत करें।
(ii) कवि जयशंकर प्रसाद की जीवनी एवं उनके द्वारा संकलित कविता 'तुमुल कोलाहल कहल में' का सारांश लिखें।
(iii) चम्पारन क्षेत्र में बाढ़ के क्या कारण हैं ?
(iv) नूतन विश्व का निर्माण कैसे हो सकता है ?
(v) स्त्री को अहेरिन, नागिन और जादूगरी कहने के पीछे क्या मंशा होती है? क्या ऐसा कहना उचित है ?
(vi) भगत सिंह के अनुसार किस प्रकार की मृत्यु सुन्दर है?

6. निम्न में से किसी एक का संक्षेपण करें— 1 × 4 = 4

(i) प्रेमचन्द के संबंध में जिज्ञासा का अर्थ यह है कि प्रेमचन्द ने दुनिया को क्या दिया है और इस दान में नवीनता और ताजगी कितनी है? फिर प्रेमचन्द ने संसार और मानव समाज को जिस नवीन दृष्टिकोण से देखा है उसमें कितनी सच्चाई है? यदि हमारे विचारों और पूर्ववर्ती संस्कारों को झकझोरने की क्षमता न हो और हम प्रभावित न हो पाएँ तो उनकी रचनाओं और स्थापनाओं को स्वीकार नहीं किया जा सकता। वह जमाना बीत गया, जब लेखक सदा सशंकित रहता था। जब जमाना बदलने के साथ ही हम नवीन कृतियों में चिन्तन और विचारों की ताजगी देखना चाहने लगे हैं। यदि कोई रचनाकार मात्र पुरानी बातों को दुहराता रहे तो उसकी कृति व्यर्थ हो जाएगी।

(ii) छात्र जीवन के लिए परिश्रम एक ऐसा अमोघ मंत्र है, जिसके महत्व को भुलाया नहीं जा सकता। परिश्रम ही वह सीढ़ी है, जिस पर चढ़कर सफलता की सीढ़ियाँ पार की जा सकती हैं। हमारे देश की संस्कृति यह बताती है कि हम कभी भी आलस्य की गिरफ्त में नहीं पड़ें। आलस्य मनुष्य मात्र का ऐसा शत्रु है, जो हमें अवनति की ओर ले जाता है। हम किसी भी क्षेत्र में रहें, किसी भी कार्य में संलग्न रहते हों, हमें सदैव परिश्रम के महत्व को समझना चाहिए। इसके लिए माता-पिता, शिक्षक एवं समाज के प्रबुद्ध बुद्धिजीवी वर्ग को आगे आना होगा।

व्याख्यासहित उत्तर

खण्ड 'अ'

OMR ANSWER-SHEET

1.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	51.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
2.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	52.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
3.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	53.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
4.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	54.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
5.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	55.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
6.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	56.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
7.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	57.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
8.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	58.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
9.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	59.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
10.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	60.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
11.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	61.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
12.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	62.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
13.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	63.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
14.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	64.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
15.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	65.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
16.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	66.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
17.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	67.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
18.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	68.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
19.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	69.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
20.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	70.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
21.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	71.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
22.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	72.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
23.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	73.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
24.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	74.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
25.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	75.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
26.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	76.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
27.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	77.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
28.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	78.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
29.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	79.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
30.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	80.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
31.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	81.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
32.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	82.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
33.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	83.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
34.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	84.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
35.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	85.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
36.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	86.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
37.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	87.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
38.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	88.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
39.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	89.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
40.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	90.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
41.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	91.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
42.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	92.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
43.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	93.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
44.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	94.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
45.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	95.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
46.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	96.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
47.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	97.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
48.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	98.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
49.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	99.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
50.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	100.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ

ANSWER

1. (C)	2. (B)	3. (A)	4. (A)	5. (C)
6. (B)	7. (A)	8. (A)	9. (B)	10. (A)
11. (A)	12. (A)	13. (C)	14. (B)	15. (A)
16. (A)	17. (C)	18. (C)	19. (A)	20. (A)
21. (D)	22. (D)	23. (D)	24. (D)	25. (A)
26. (A)	27. (B)	28. (B)	29. (C)	30. (A)
31 (B)	32. (B)	33. (C)	34. (A)	35. (B)
36. (B)	37. (B)	38. (A)	39. (A)	40. (A)
41. (D)	42. (C)	43. (B)	44. (D)	45. (B)
46. (B)	47. (A)	48. (C)	49. (C)	50. (A)
51. (A)	52. (C)	53. (C)	54. (C)	55. (B)
56. (A)	57. (B)	58. (D)	59. (A)	60. (C)
61. (A)	62. (D)	63. (B)	64. (B)	65. (D)
66. (C)	67. (A)	68. (A)	69. (B)	70. (C)
71. (C)	72. (A)	73. (B)	74. (B)	75. (B)
76. (A)	77. (B)	78. (B)	79. (D)	80. (A)
81. (D)	82. (B)	83. (D)	84. (B)	85. (C)
86. (D)	87. (B)	88. (B)	89. (D)	90. (D)
91. (A)	92. (B)	93. (B)	94. (A)	95. (C)
96. (A)	97. (A)	98. (B)	99. (A)	100. (B)

खण्ड – ब

1. i) मेरी सबसे प्रिय ऋतु (बसन्त ऋतु)

भारत में चार ऋतुएँ हैं। बसन्त ऋतु उनमें एक है। सभी ऋतुओं में बसन्त ऋतु का अपना आकर्षण होता है। यह सुन्दरता, संगीत तथा खुशी की ऋतु है। यह कवियों की प्रिय ऋतु है। वे लोग इस ऋतु की सुन्दरता, संगीत तथा खुशी से प्रेरणा लेते हैं।

मैं सभी ऋतुओं में बसन्त ऋतु को सबसे ज्यादा पसन्द करता हूँ, क्योंकि यह सबसे अच्छी ऋतु है। बसन्त शरद् ऋतु के बाद आता है। यह फरवरी के मध्य से शुरू होता है और अप्रैल के अन्त तक रहता है। इस ऋतु में दिन और रात न अधिक ठंढे होते हैं और न अधिक गर्म होते हैं। दिन और रात न अधिक बड़े होते हैं न अधिक छोटे होते हैं। जब बसन्त ऋतु प्रारम्भ होती है, तब पृथ्वी बहुत आकर्षक दिखती है। मैदान हरियाली से भर जाते हैं। सभी वृक्ष नयी हरी पत्तियाँ देने लगते हैं। आम के वृक्ष मंजर देने लगते हैं। इस प्रकार, बसन्त फलों और फूलों की ऋतु है।

बसन्त ऋतु किसानों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण होती है। फसलें मैदानों में पक जाते हैं। किसान अपने फसलों को काटने में व्यस्त रहते हैं। वे घर में गेहूँ तथा जौ एकत्रित करते हैं। विभिन्न प्रकार के फल इस ऋतु में फलते हैं। इस प्रकार, यह ऋतु किसानों के लिए खुशिहाली लाता है। इसके अतिरिक्त बसन्त हिन्दुओं के लिए त्योहारों की ऋतु है। होली और सरस्वती पूजा इस ऋतु के महत्त्वपूर्ण त्योहार हैं।

इस प्रकार, बसन्त ऋतु एक आनन्ददायक ऋतु है। बसन्त की सुन्दरता हमारे दुःखों को भूला देती है। इस ऋतु को 'ऋतुओं की रानी' ठीक ही कहा जाता है।

(ii) बिहार दिवस

बिहार का प्रथम उल्लेख प्राचीन धार्मिक ग्रंथ शतपथ ब्राह्मण में मिलता है। इस ग्रंथ में माधव विदेह नामक राजा का उल्लेख है, जिन्होंने मिथिला में राज्य की स्थापना की। इस राज्य का नाम 'बिहार' बौद्धों के निवास स्थान 'विहार' के नाम पर पड़ा, अर्थात् विहार धीरे-धीरे ठेठ होकर 'बिहार' में परिवर्तित हो गया। बंगाल विभाजन (1905 ई० में) और झारखण्ड (2000 ई० में) अलग राज्य बने। इन सबके बावजूद बिहार ने अपना स्थायित्व बरकरार रखा है और निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

2012 ई० में बिहार ने अपनी स्थापना के गौरवमयी 100 वर्ष पूरा कर लिया और इस उपलक्ष्य में राज्य सरकार ने 22 मार्च को हर वर्ष बिहार दिवस मनाने की घोषणा की। बिहार दिवस हमें अपने राज्य के पुराने गौरव, कला, संस्कृति की याद दिलाता है। हमारा बिहार विभूतियों की भूमि रही है, यह याद दिलाता है। स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की यह जन्म-भूमि रही है। गौतम बुद्ध और महावीर की यह धरती शुरूआत से ही गौरवमयी रही है। बिहार की वर्तमान राजधानी पटना (पाटलीपुत्र) को कई शासकों ने अपनी राजधानी चुना था। बिहार में अनेक धरोहर एवं दर्शनीय स्थल हैं। सिक्खों के दसवें और अंतिम गुरू गोविन्द सिंह का जन्म भी पटना सिटी में हुआ था। पटना सिटी सिक्खों का एक पवित्र धार्मिक स्थल है। गया बौद्धधर्म के अनुयायियों का तीर्थस्थल है। प्राचीन नालन्दा विश्वविद्यालय अपने समय भारत का प्रमुख शैक्षणिक स्थल था। चीनी यात्री और बौद्ध भिक्षु ह्वेनसांग, हर्षवर्धन के काल में बौद्ध धर्म के मूल ग्रन्थों का अध्ययन करने नालन्दा विश्यविद्यालय में आया था। इससे इस विश्वविद्यालय की महत्ता को आंका जा सकता है। वर्तमान में पुनः नालन्दा विश्वविद्यालय को स्थापित किया जा रहा है। पटना को उत्तरी बिहार से जोड़ने के लिए पटना के निकट गंगा नदी पर बना महात्मा गाँधी सेतु एशिया का सबसे बड़ा सड़क पुल है। अन्य भी बहुत सारे दर्शनीय स्थल हैं जो अपनी महत्ता के लिए जाने जाते हैं।

अतःयह कहा जा सकता है कि बिहार दिवस हमें हमारी पुरानी सभ्यता, संस्कृति और गौरव की याद दिलाती है।

(iii) परोपकार

अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनं द्वयम्।
परोपकार, पुण्याय पापाय परपडनम्॥

अठारहवें पुराणों में महाभारतकार महाकवि व्यास के दो ही सार-वचन हैं— परोपकार से पुण्य होता है और परपीड़न से पाप। सचगुच उनके ये वचन बड़े ही मूल्यवान और विलक्षण हैं। परोपकार अर्थात् दूसरों की निःस्वार्थ भलाई से बढ़कर मनुष्य-जीवन की और कोई सार्थकता क्या हो सकती है? केवल अपने लिए तो नालियों के कीड़े-मकोड़े भी जी लेते हैं, किन्तु मनुष्य ही है जो दूसरों के लिए जीता और मरता है।

यदि हम आँखें खोलकर देखें, तो प्रकृति के स्वर्ण-पत्रों पर परोपकार की अनगिनत कहानियाँ अंकित पाएँगे। धरती सब कष्ट सहतो है और हमारे लिए चंदन का पालना ही नहीं बनती, वरन् माता की भाँति पालन-पोषण भी करती है। सूरज स्वयं दिनभर तपता रहता है और सारे संसार में उष्मा, प्रकाश एवं नवजीवन का संचार करता है। चाँद रातभर जागता है और हमें चाँदनी की सौगात देता है। बादल अपने प्राणों में न मालूम कितनी बिजलियों की तड़प छिपाए रहता है, फिर भी सारे संसार को जलदान द्वारा संतृप्त एवं संजीवित करता है। प्रियतम सागर से मिलने हाँफती-दोड़ती सरिताएँ जाती हैं, लेकिन फिर भी मुक्तहस्त आमंत्रण लुटाती चलती है—'आओ, हमारा जीवन तुम्हारे लिए, केवल तुम्हारे लिए है।' रसाल-पादप रसीले फलों से जब लद जाता है तब वह झुककर उन्हें लुटाने के लिए लालायित रहता है। हरसिंगार जब फूलों से सज जाता है तब हर दिशा को गन्धपूरित कर देता है। प्रत्येक मानव का कर्त्तव्य है कि वह परोपकार के लिए सर्वस्व न्योछावर कर दे। हो सकता है, इसके लिए काँटों की राह पर चलना पड़े, किन्तु घबराने की आवश्यकता नहीं है। कपास तो अनेकानेक कष्ट झेलती है और हमारी लाज ही नहीं बचाती, वरन् गर्मी और सर्दी से हमारी रक्षा भी करती है। महर्षि दधीचि और राजा शिवि की कथाओं से क्या हम परिचित नहीं हैं? महर्षि दधीचि ने देवताओं के कल्याण के लिए अपनी हड्डियाँ तक दे डाली। और राजा शिव? उन्होंने तो एक कबूतर की जान बचाने के लिए अपना अंग तक काट कर दे दिया। अतः परोपकार के मार्ग में आए हुए काँटों से भयभीत नहीं होना है।

परोपकारी मनुष्य स्वार्थ के संकुचित घेरे में नहीं घिरता। वह कभी दूसरों को दुःख नहीं देना चाहेगा। उसका तन-मन हर क्षण दूसरों की हित-चिंता में रहा रहेगा। ऐसे मनुष्य को हृदय से विकारों की काई मिट जाती है, उसकी दुर्गन्ध समाप्त हो जाती है और उसका हृदय स्वच्छ मंदिर बन जाता है, प्रभु का निवा हो जाता है। अतः यदि हम अपने हृदय को क्षुद्रताओं के नरक से महत्ताओं के स्वर्ग में परिणत कर देना चाहते हैं तो हम अपने तन-मन-धन को दूसरों की भलाई के लिए होम कर देने के लिए सदा तैयार रहें। गोस्वमी तुलसीदास ने ठीक ही कहा है--

भूपन भनिति भूति भलि सोई। सुरसरि सम सबकर हित होई।

भूखों को अन्न, नंगों को वस्त्र, बीमारों को सेवा-शुश्रुषा-औषध और अज्ञानियों को ज्ञान देकर हम विभिन्न प्रकार से उपकार कर सकते हैं। परोपकार का स्वर्ण सुअवसर जब भी हमारे सामने आए, हमें उससे कभी न चूकना चाहिए। हम यदि यश-प्रतिष्ठा, धन-वैभव और सुख-शांति प्राप्त करना चाहते हैं तो परोपकार के मार्ग पर चलना अपना परमधर्म समझें।

(iv) छठ पूजा

बिहार अपनी सांस्कृतिक विशिष्टता के लिए प्रसिद्ध है। यह सांस्कृतिक विशिष्टता यहाँ मनाए जाने वाले पर्वों-त्योहारों से भी परिलक्षित होता है। छठ

पर्व बिहार के क्षेत्रीय त्योहारों में सबसे महत्वपूर्ण है। कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष के चौथे दिन से यह प्रारंभ होती है। कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष के छठे दिन पहला अर्घ्य सूर्यास्त को तथा दूसरा अर्घ्य अगले दिन सूर्योदय के समय डाला जाता है। यह सूर्यदेव को समर्पित त्योहार है जो अपनी धार्मिकता के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण का भी कार्य करता है।

छठ व्रत बिहार और बिहार से सटे क्षेत्रों—उत्तर प्रदेश, झारखण्ड आदि क्षेत्रों में मनाया जाता है। बिहार के लोगों का विभिन्न कारणों से पलायन देश के विभिन्न क्षेत्रों के साथ-साथ विदेशों में भी होता है। यहाँ के लोग वहाँ जाकर अपनी विशिष्टता से ओत-प्रोत त्योहार छठ-पूजा अवश्य करते हैं। इस त्योहार के माध्यम से बिहारी लोग एकत्रित होकर इसका भव्य आयोजन करते हैं।

छठ पूजा के लिए नदियों, तालाबों आदि की सफाई की जाती है। इस अवसर पर होनेवाले सफाई कार्य में पूजा करनेवाले, स्वयंसेवी संस्थानों एवं अन्य लोगों के साथ-साथ सरकार की भी सहभागिता होती है। इस कार्य में सभी जाति और धर्मों के लोगों की सहभागिता होती है जिससे लोगों के बीच असमानता, द्वेष जैसी भावनाओं का ह्रास होता है और उनके बीच सौहार्द की भावना का उदय होता है। जल स्थलों की सफाई से जल प्रदूषण के प्रति लोगों में जागरूकता का संचार होता है। सफाई से गाद-गणों का भी निष्कासन होता है जिससे अन्य समस्याएँ जैसे बाढ़ आदि का भी समाधान होता है। इस अवसर पर सड़कों, गलियों आदि की सफाई भी होती है जिससे कूड़ा-करकटों को उचित स्थानों पर डालने की प्रवृत्ति और सफाई की महत्ता को लोगों के बीच रखा जाता है। कूड़ा-करकटों के दूषित गंध से वायु प्रदूषण होता है, अत: इस सफाई से वायु प्रदूषण को दूर किया जाता है।

स्पष्टत: छठ पूजा धार्मिक आस्था के साथ-साथ प्रदूषण नियंत्रण एवं जागरूकता का भी पर्व है। यह ब्रह्मांड के सबसे बड़े प्राकृतिक देवता सूर्य की उपासना का पर्व है। बिहार में इसकी समृद्ध परम्परा पर्व के रूप में होने के कारण यह बिहार की विशिष्टता को प्रतिबिंबित करता है।

(v) शहरी जीवन

आप यदि राजमार्गों से निकल जाएँ, तो पाएँगे कि धुआँ उड़ाती, कोलाहल करती, मरण का आमंत्रण लुटाती—टैक्सियाँ, बसें और ट्रामगाड़ियाँ बेतहाशा भागी जा रही है, जिनमें मनुष्य निर्जीव पार्सल के पैकेट की तरह ठसाठस भरे हैं। इन राजमार्गों के दोनों ओर आकाश-आश्लेषी अट्टालिकाएँ हैं, जिनमें मरकरी और नायलन बल्बों की रोशनी दूधिया चाँदनी को चुनौती दे रही है, जिनके प्रकाश में बैठे तुदिल व्यापारियों की जेबकतरा मुस्कानें बिछल रही हैं, किनारे-किनारे अपार जनसमूह का समुंदर लहरा रहा है। सजी-धजी दुकानों में हवाखोरी को निकली नागिन-सी रूपसियों की भीड़ उमड़ आई है। गगन में चाँद का कौन पता लगाए, इस अपार भीड़ में जहाँ-तहाँ चाँद का झुण्ड ही नजर आ रहा है। सब भाग रहे हैं। बेतहाशा भाग रहे हैं—कारखानों से झुलसे लोग, दफ्तरों से चुसे लोग, मजदूरी की चक्की में पिसे लोग, दिनभर के कामों में घिसे लोग। बाहरी चकाचौंध में नरों के स्फूर्तिहीन कार्टून किसी विद्युत-तरंग पर भागते चले जा रहे हैं। यहाँ पग-पग पर मानवस्वेद का अथाह पंक पड़ा दिखता है, विज्ञान के इन्द्रजाल नजर आता है। काउपर ने ठीक कहा था कि नगर मनुष्य की दुनिया है, परंतु गाँव ईश्वर की। शहरों में प्रकृति की हर कला ध्वस्त हो चुकी है और उसके श्मशान पर उभर आई है, एक नई दुनिया। यहाँ ईश्वर के हाथों निर्मित हरसिंगार मोहक गंध नहीं बिखेरता, वरन बंद शीशियों में बैठे फाहे गंध लुटाते हैं, यहाँ चाँद और सितारों की महफिल नहीं सजती, वरन् बल्बों की बारात सजती है, यहाँ पहाड़ की गोद में झरने नहीं मचलते, वरन् लोहे के यंत्र से अशुद्ध जल के फव्वारे छूटते हैं, यहाँ दूर-दूर गंधमाती हवा तन-मन में स्फूर्ति नहीं उत्पन्न करती, वरन् कमरे के कैद हवा ही विद्युत-यंत्रों के द्वारा चक्कर काटती है, यहाँ पक्षियों की नैसर्गिक रागिनी नहीं सुनाई पड़ती, वरन् कर्णस्फार ध्वनिविस्तार-यंत्रों से बेताल राग चीखता है।

शहर में जब रात गहराती है, तब भीड़-तमाशाबीनी का ज्वार थमता नजर आता है। सड़कें उदास हो जाती हैं, व्यापारिक रोशनी की बहार कम हो जाती है। एक और नभचुंबी वातानुकुलित भवनों में करोड़पति करवटें बदलते रहते हैं, तो दूसरी ओर खुले आकाश की छत के नीचे फुटपाथों पर हजार-हजार लोग खर्राटे लेते नजर आते हैं या असूर्यंपश्या गलियों के डस्टबिनों में न मालूम कितने श्वान उच्छिष्ट उकटते नजर आते हैं। नगर में स्पष्ट दिखाई पड़ने लगता है कि परमात्मा ने यह दुनिया नहीं बनाई। यदि उसने यह दुनिया बनाई होती, तो आदमी-आदमी के बीच इतनी दुर्लंघ्य खाई नहीं होती, आकाश-पताल की ऐसी दूरी नहीं होती। नगर का वाह्य तन तो बड़ा आकर्षक है, किन्तु उसका अंत:करण कुरूप और घिनौना, जैसे कोई कनक-घट विषरस से भरा हो। यहाँ के मनुष्य बहुत बातूनी, बहुत बनावटी होते हैं। शिष्टाचार के नाम पर बातों में तो यहाँ के लोग मिसरी घोलते हैं, ओठों से शहद टपकाते हैं, किन्तु इनके हृदय में छल और कपट का जहर भरा रहता है। ये बिल्कुल मयूरधर्मी लोग हैं, जिनके आवरण तो बड़े ही चमकीले और इंद्रधनुषी हैं, किन्तु आहार साँप जैसा जहरीला जंतु।

(vi) स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त)

15 अगस्त भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण दिवस है। भारत 1947 में इसी दिन स्वतंत्र हुआ। इसी दिन अपना देश दो सौ वर्षों से अधिक दिनों के बाद दासता की बेड़ियाँ तोड़ सका। इसी दिन भारत के इतिहास का काला अध्याय समाप्त हुआ तथा आजादी के बाद नए अध्याय की शुरूआत हुई।

15 अगस्त अपने देश के लोगों के लिए एक विशेष महत्व रखता है। यह हमें देश के स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान तथा कष्टों की याद दिलाता है। हमलोग प्रत्येक वर्ष इसी दिन स्वतंत्रता-दिवस मनाते हैं और उन स्वतंत्रता सेनानियों को याद करते हैं, जो देश की आजादी के लिए शहीद हो गए। वीर कुँवर सिंह, लक्ष्मीबाई, मंगल पाण्डेय, भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद तथा सुभाषचन्द्र बोस उन शहीदों में प्रमुख हैं। मोतीलाल नेहरू, महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू, डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद और सी॰आर॰दास जैसे महापुरूषों ने भी स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लिया।

15 अगस्त पूरे राष्ट्र का पर्व है। इस दिन हमारे देश के लोग आनन्द लेते हैं, नाचते हैं और गाते हैं। इसी दिन पूरे देश में प्रत्येक वर्ष स्वतंत्रता दिवस मनाया जाता है। प्रत्येक विद्यालय, महाविद्यालय तथा कार्यालय में इस दिन झंडा समारोह का आयोजन किया जाता है। इस दिन पूरा आकाश तिरंगा झंडों से भर जाता है।

इस प्रकार, 15 अगस्त हमें उन स्वतंत्रता सेनानियों तथा नेताओं के बलिदान, कष्ट तथा संघर्ष की याद दिलाता है, जिसने भारत को आजादी दिलायी। हमारे देश ने आजादी प्राप्त की, लेकिन हमलोगों ने देश के उन सपूतों को खो दिया, जिसने आजादी दिलायी। इस प्रकार, 15 अगस्त न केवल खुशहाली लाता है, बल्कि दर्द और दु:ख भी लाता है।

2. (क) व्याख्या—प्रस्तुत पंक्तियाँ रामधारी सिंह दिनकर के निबंध अर्द्धनारीश्वर से ली गई है। निबंधकार दिनकर कहते हैं कि नारी में दया, माया, सहिष्णुता और भीरुता जैसे स्त्रियोचित गुण होते हैं। इन गुणों के कारण नारी विनाश से बची रहती है। दया के कारण देवी कहलाती है। भीरुता के कारण अनावश्यक विनाश से बच जाती है। यदि इन गुणों को पुरुष अंगीकार कर ले तो पुरुष के पौरुष में कोई दोष नहीं आता और पुरुष नारीत्व से पूर्ण हो जाता है। इसीलिए निबंधकार अर्द्धनारीश्वर की कल्पना करता है जिसमें पुरुष स्त्री का गुण और स्त्री पुरुष का गुण लेकर महान् बन सके। प्रकृति से नर-नारी को समान बनाया है पर गुणों में अन्तर है। अत: निबंधकार नारीत्व के लिए एक महान् पुरुष गाँधीजी का हवाला देता है कि गाँधीजी ने अंतिम दिनों में नारीत्व की ही साधना की थी।

(ख) व्याख्या—प्रस्तुत पंक्तियाँ हिन्दी के यशस्वी कहानीकार श्री चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' की कहानी "उसने कहा था" से ली गई है। यह उक्ति ब्रिटिश सेना में कार्यरत जमादार लहना सिंह की है। उसके शरीर की रगों में युद्ध करने की आतुरता है। वह चाहता है कि उसके उच्च अधिकारी उसके साथ तैनात सैनिकों को शत्रु पर आक्रमण करने की अनुमति दें। मोर्चे पर निष्क्रिय डटे रहने से वह क्षुब्ध है। इसलिए वह कहता है कि बिना फेरे घोड़ा बिगड़ जाता है और बिना लड़े सिपाही की क्षमता कुन्द हो जाती है।

इस प्रकार कहानीकार ने इन पंक्तियों में सैनिक की मानसिकता का सशक्त निरूपण किया है। उसकी भुजाएँ युद्ध करने के लिए फड़कती हैं और वह अपने शौर्य को प्रदर्शित करना चाहता है।

(ग) व्याख्या—प्रस्तुत पंक्तियाँ भूषण कवि की कविता 'छत्रसाल-दशक' से ली गयी है जो पाठ्यपुस्तक में संकलित है। इस अवतरण में वीर रस के प्रसिद्ध कवि भूषण जी ने महाराज छत्रसाल की तलवार का गुणगान किया है।

इन पंक्तियों में कवि के कहने का भाव यह है कि छत्रसाल बून्देला की तलवार इतने तेज धारवाली हैं कि पलभर में ही शत्रुओं को गाजर-मूली की तरह काट-काटकर समाप्त कर देती है। साथ ही काल को भोजन प्रदान करती है। यह तलवार साक्षात् कालिका माता के समान है। वैसा ही रौद्र रूप छत्रसाल की तलवार भी धारण कर लेती है।

(घ) व्याख्या—प्रस्तुत काव्यांश शमशेर बहादूर सिंह द्वारा रचित कविता 'उषा' से अवतरित है। यहाँ कवि प्रात:कालीन दृश्य का मनोहारी चित्रण कर रहा है। प्रात:कालीन आकाश में जादू होता-सा प्रतीत होता है जो पूर्ण सूर्योदय के पश्चात् टूट जाता है। उषा का जादू यह है कि वह अनेक रहस्यपूर्ण एवं

विचित्र स्थितियाँ उत्पन्न करता है। कभी पुती स्लेट, कभी गीला चौका, कभी शंख के समान आकाश तो कभी नीले जल में झिलमिलाती देह–ये सभी दृश्य जादू के समान प्रतीत होते हैं।

3. **सेवा में,**
मुख्य संपादक,
दैनिक जागरण,
पटना।

विषय—कानून-व्यवस्था/चोरी में वृद्धि।

महोदय,

बड़े खेद के साथ मुझे यह शिकायती-पत्र लिखना पड़ रहा है। आशा है इसकी उपयोगिता को समझते हुए आप इसे अपने पत्र में स्थान देंगे।

आजकल फुलवारीशरीफ अपराध, चोरी, बलात्कार, उठाईगिरी जैसी समस्याओं का केन्द्र बनता जा रहा है। जैसे-जैसे नगर की प्रगति हो रही है, लूटपाट, डकैती, चोरी जैसे अपराधों में भी वृद्धि हो रही है। किसी भी मोहल्ले में कार खड़ी करना सुरक्षित नहीं है। गत मास न्यू कॉलोनी से तीन कारें दिन-दहाड़े चोरी हुई जिनका अब तक पता नहीं चल सका। पिछले हफ्ते चार महिलाओं की सोने की चैनें और बालियाँ भरे बाजारों में उड़ा ली गईं। अभी तक अपराधी पकड़े नहीं जा सके हैं। कल रात को एक बारात में रिवाल्वर की नोक पर महिलाओं के आभूषण उतार लिए गए। लगता है, यहाँ पुलिस का नहीं, किसी तीसरे प्रशासन का साम्राज्य है। यह स्थिति देखकर फिल्मी खलनायकों के आतंक याद आने लगते हैं।

आपसे निवेदन है कि 'कुछ कीजिए' ताकि हम नगरवासी चैन से घर से बाहर निकल सकें।

भवदीय
अनिकेत्त

दिनांक : 29.7.2024

अथवा,

सेवा में,
प्रधानाचार्य महोदय,
अ०ब०स० विद्यालय,
म०प० नगर।

विषय : मासिक शुल्क कम कराने के लिए प्रार्थना-पत्र।

श्रीमान् जी,

सविनय निवेदन है कि मैं बारहवीं कक्षा का विद्यार्थी हूँ। मैं एक निर्धन परिवार से सम्बन्ध रखता हूँ। मेरे पिताजी की कपड़े की एक छोटी-सी दुकान है जिससे इतनी आमदनी नहीं हो पाती कि परिवार का भरण-पोषण सुचारु रूप से हो सके। मेरे पिताजी मेरी पढ़ाई-लिखाई के बोझ को उठाने में असमर्थ हैं।

मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मेरा मासिक शुल्क माफ करने की कृपा करें जिससे मैं अपनी पढ़ाई जारी रख सकूँ। आपको पूर्ण विश्वास दिलाता हूँ कि अपने आचरण और पठन-पाठन में आपको किसी शिकायत का मौका न दूँगा।

धन्यवाद !

आपका अज्ञाकारी शिष्य
कुलभूषण
बारहवीं कक्षा

दिनांक 15 फरवरी, 2024

4. (i) सूबेदार को अंग्रेज सरकार से बहादुरी का खिताब और जमीन-जायदाद मिली थी, उन्हें इसके बदले में अपनी वफादारी निभानी थी।

(ii) बिशनी को अपने सिपाही पुत्र एवं मुन्नी को सिपाही भाई की प्रतीक्षा है। वे डाकिए की राह चिट्ठी आने की वजह से देखती है क्योंकि उसने पिछली चिट्ठी में लिखा था कि वे वर्मा की लड़ाई पर जा रहे हैं। माँ और बेटी किसी अनिष्ट की शंका के कारण चिट्ठी का इंतजार करती हैं।

(iii) डायरी मन का कूड़ा है। डायरी में शब्दों और अर्थों के बीच तटस्थता कम रहती है। डायरी में व्यक्ति अपने मन की बातों को कागज पर उतारता है। वह अपने यथार्थ को अपने ढंग से अपने समझने योग्य शब्दों में लिखता है। डायरी खुद के लिए लिखी जाती है, दूसरों के लिए नहीं। डायरी लिखने में अपने भाव के अनुसार शब्द नहीं मिल पाते हैं। यदि शब्दों का भंडार है भी तो उन शब्दों के लायक वे भाव ही न होते हैं। डायरी में मुक्ताकाश भी होता है, तो सूक्ष्मता भी। शब्दार्थ और भावार्थ मेल के कारण डायरी का लिखा जाना मुश्किल है।

(iv) जब मानव जाति ने कृषि का आविष्कार किया तो नारी घर में और पुरुष बाहर रहने लगा। यहाँ से जिन्दगी दो टुकड़ों में बँट गई। घर का जीवन सीमित और बाहर का जीवन निस्सीम होता गया एवं छोटी जिन्दगी बड़ी जिन्दगी के अधिकाधिक अधीन होती चली गई। कृषि विकास के साथ ही नारी की पराधीनता आरम्भ हो गई।

(v) हममें वाक्शक्ति न होती तो मनुष्य गूँगा होता, वह मुकबधिर होता। मनुष्य को सृष्टि की सबसे महत्वपूर्ण देन उसकी वाक्शक्ति है। इसी वाक्शक्ति के कारण वह समाज में वार्तालाप करता है। वह अपनी बातों को अभिव्यक्ति करता है। यह ईश्वरीय अनमोल दी हुई कृति है। यदि हममें इस वाक्शक्ति का अभाव होता तो हम पशुओं की भाँति होते। जो हम सुख-दुःख इंद्रियों के कारण अनुभव करते हैं वह आवाक् रहने के कारण नहीं कह पाते।

(vi) 'गीत' शब्द में 'प्र' उपसर्ग जोड़ने से 'प्रगीत' बना है। गीत वैसी कविताओं को कहते हैं जो भाव आधारित होते हैं। इसमें व्यक्ति के हृदय की भावनाओं की अभिव्यक्ति होती है। गीत मन के उद्गार है। प्रगीत गीत का ही प्रतिरूप है, जिसमें नितांत वैयक्तिक और आत्मपरक भाव की अभिव्यक्ति होती है। नई कविता आंदोलन के कवियों ने बड़े सुन्दर प्रगीत लिखे हैं। प्रगीत अपेक्षाकृत छोटे होते हैं। यह आख्यानक काव्य नहीं है। बल्कि मुक्त काव्य है।

वस्तुतः गीत का ही नया कलेवर है।

(vii) 'अधिनायक' शीर्षक कविता में 'हरचरना' एक गरीब विद्यार्थी है। राष्ट्रीय गान वह गाता है, लेकिन उसे यह पता नहीं कि वह राष्ट्रीय गान क्यों गा रहा है। इस गान को एक सामान्य प्रक्रिया मानकर गाता है। एक गरीब व्यक्ति के लिए राष्ट्रीय गान का क्या महत्व। देशभक्ति आजादी आदि का अर्थ वह नहीं समझ पाता। उसकी आजादी और देशभक्ति कादुश्मन तो वे व्यक्ति हैं जो गरीबों की कमाई पर आज शासक बने हुए हैं। वे तानाशाह हो गए हैं। आज जनता उनसे डरती है। कोई उनके खिलाफ मुँह नहीं खोलता। हरचरना के डरने का कारण यही सभी विषय है। मुँह खोलेगा तो उसे दंड भेगना होगा।

(viii) कबीरदास पाखंड के विरोधी थे। षड्दर्शन वर्णाश्रम व्यवस्था का पोषक धर्म था। कबीर ने षड्दर्शन की बुराइयों की तीखी आलोचना की और इसके विचारों की ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया अर्थात् कानों से सुनकर ग्रहण नहीं किया, बल्कि उसके पाखंड की धज्जी-धज्जी उड़ा दी। उन्होंने जनमानस का ध्यान भी इसकी बुराइयों की ओर आकृष्ट किया और उसके विचारों को मानने का विरोध किया।

(ix) 1889 ई० में

(x) 16 अगस्त, 1904 ई० में निहालपुर, इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश)

5. (i) ओमप्रकाश वाल्मीकि हिन्दी में दलित आंदोलन से जुड़े महत्वपूर्ण रचनाकार हैं। उनके साहित्य में महज आक्रोश और प्रतिक्रिया से परे समता, न्याय और मानवीयता पर टिकी एक नई पूर्णतर सामाजिक चेतना और संस्कृतिबोध की आहट है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा 'जूठन' ने लोगों का ध्यान आकृष्ट किया था। अपनी संवेदना और मर्मस्पर्शिता के कारण प्रस्तुत अंश मन पर गहरा असर छोड़ता है।

लेखक का पूरा परिवार गाँव में मेहनत-मजदूरी का काम करता था जिसमें एक-एक घर में 10-15 मेवेशियाँ का काम, बैठकखाने की सफाई का काम करना पड़ता था। सर्दी के महीनों में यह काम और कठिन हो जाता था क्योंकि प्रत्येक घरों से मवेशियों के गोबर उठाकर गाँव से बाहर कुरड़ियों पर या उपले बनाने की जगह तक पहुँचाना पड़ता था। इस सब कामों के बदले मिलता था दस जानवर 25 पींछे सेर (12-13 किलो) अनाज। दोपहर में बची-खुची रोटी जो मिलती थी खासतौर पर चूहड़ों को देने के लिये आटे में भूसा मिलाकर बनाई जाती थी। कभी-कभी जूठन भी भंगन की टोकरी में डाल दी जाती थी।

शादी-ब्याज के मौके पर जूठे पत्तल चूहड़ों के टोकरे में डाल दिये जाते थे, जिन्हें घर ले जाकर वे जूठन इकट्ठी कर लिया करते थे। पत्तलों से पूड़ियों के टूकड़े जो बचे होते थे उन्हें चारपाई पर कोई कपड़ा डालकर उस पर सूखा कर रख लिये जाते थे। मिठाइयाँ जो इकट्ठी होती थी वे कई-कई दिनों तक अथवा बड़ी बारातों की मिठाइयाँ कई-कई महीने तक आपस में चर्चा कर-करके खाते रहते थे। सुखी हुई पूरियों की लुग्दी बनाकर अथवा उबाल कर मिर्च-मसाले डालकर खाने में मजा आता था। आज जब इन सब बातों के बारे में लेखक सोचता है तो 'मन के भीतर काँटे जैसा उगने लगता है। कैसा जीवन था।''

लेखक अपनी माँ के साथ सुखदेव सिंह त्यागी की बेटी के विवाह में टोकरी लेकर घर के बाहर जूठन समेटकर इकट्ठा करती है। सुखदेव सिंह के घर के बाहर आने पर लेखक की माँ अपने लिये पत्तल पर खाने हेतु कुछ पुरियों की माँग करती है, बदले में उसे सुखदेव सिंह की फटकार मिलती

है। वह चुपचाप टोकरी लेकर घर चली जाती है। यह उसकी महान्ता का प्रतीक है।

"जूठन" शीर्षक आत्मकथा के माध्यम से लेखक ने अपने बचपन का संस्मरण एवं परिवार की गरीबी का वर्णन करते हुए इस बात को सिद्ध करने का प्रयास किया है कि **"दिन रात खप कर भी हमारे पसीने की कीमत मात्र जूठन, फिर भी किसी को कोई शिकायत नहीं। कोई शर्मीन्दगी नहीं कोई पश्चाताप नहीं।"** लेखक ने अपने इस वक्तव्य में यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि गरीबों के पास गरीबी है किन्तु साथ ही दिल और दिगाम भी है साथ ही संतोष भी। ये विशेषताएँ अमीरों में नहीं पायी जाती। गरीब चुप-चाप अपमान बर्दाश्त कर लेता है, उसे भूल भी जाता है। दुर्व्यवहार करनेवाले को माफ भी कर देते है। लेखक के संकलन में यह प्रत्यक्ष रूप से पाते हैं।

(ii) जीवनी—जयशंकर प्रसाद छायावाद के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। इनका जन्म 1889 ई॰ में वाराणसी में 'सुँघनी साहू' परिवार में हुआ। इनके पिता प्रसाद साहू के यहाँ साहित्यकारों को बड़ा मान मिलता था। प्रसाद ने आठवीं कक्षा तक की शिक्षा क्वींस कॉलेज से प्राप्त की, परन्तु परिस्थितियों से मजबूर होकर उन्हें स्कूल छोड़ना पड़ा तथा घर पर ही संस्कृत, फारसी, उर्दू और हिन्दी का अध्ययन किया। किशोरावस्था में ही माता-पिता तथा बड़े भाई का देहान्त हो जाने के कारण परिवार और व्यापार का उत्तरदायित्व इन्हें संभालना पड़ा, जिसे इन्होंने हँसते-मुस्कुराते हुए सँभाला। उनका जीवन संघर्षों और कष्टों में बीता। पर साहित्य-पूजन और साहित्य-अध्ययन के प्रति वे सदैव जागरूक रहे। सन् 1937 में इनका देहावसान हुआ।

जयशंकर प्रसाद हिन्दी के बहुमुखी प्रतिभा-सम्पन्न साहित्यकार हैं। वे कवि, नाटककार, कहानीकार तथा उपन्यासकार के रूप में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। उन्हें हिन्दी का रवीन्द्र कहा जाता है। चित्रधारा, काननकुसुम, प्रेमपथिक, महाराणा का महत्त्व, झरना, लहर, आँसू तथा कामायनी उनकी काव्य-रचनाएँ हैं। **'कामायनी'** प्रसाद का महाकाव्य है। यह छायावाद की ही नहीं, आधुनिक हिन्दी काव्य की अमूल्य निधि है।

प्रसाद के नाटक हैं-विशाख, अजातशत्रु, स्कन्दगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, चन्द्रगुप्त आदि। कंकाल, तिली, इरावती (अधुरा) इनके उपन्यास हैं। छाया, आँधी, प्रतिध्वनि, इन्द्रजाल तथा आकाशदीप इनके पाँच कहानी संग्रह हैं।

कविता का सारांश—जयशंकर प्रसाद छायावादी कवि हैं। प्रसाद मुख्यतः गहन अनुभूति के रचनाकार हैं। उनके अनुभव की सीमाएँ हैं और इसी कारण यथार्थवादी लेखकों जैसी व्यापकता उनमें प्राप्त नहीं होती, पर अध्ययन-मनन द्वारा उन्होंने इतिहास की दृष्टि प्राप्त की थी और कामायनी में उनका युगबोध सहज ही देखा जा सकता है। प्रसाद का समस्त साहित्य मानवीय और सांस्कृतिक भूमिका पर प्रतिष्ठित है। प्रेम-सौंदर्य आदि की अनुभूतियाँ उनकी मानवीयता से संबंध रखती हैं। प्रस्तुत कविता प्रसाद की दुनिया के बारे में समझ का प्रतिफलन है।

'तुमुल कोलाहल कलह में' कविता महाकाव्य कामायनी के निर्वेद सर्ग से उद्धृत है। इड़ा के प्रजा और मनु के मध्य युद्ध की समाप्ति के बाद सर्वत्र शोक का वातावरण छाया हुआ था। तभी दूसरी ओर से श्रद्धा आ जाती है। इड़ा ने विराहिणी श्रद्धा को आश्रय दिया, किन्तु जब श्रम ने मूर्च्छित अवस्था में पड़े हुए मनु को देखा तो उसकी वेदना अत्यधिक मुखर हो उठी। दीर्घकाल के पश्चात् श्रद्धा और मनु का मिलन होता है। श्रद्धा मनु को बताती है कि वह भावनाओं के कोहाहल में शान्ति की दुतिनी है। छायावादी कवियों की यह विशेषता है कि उनके वाक्यों में लाक्षणिक और प्रतीकार्थ का ज्यादा प्रयोग है। श्रद्धा हृदय का प्रतीक, इड़ा बुद्धि का और मनु मन का। मन इन दोनों से संचालित होता है। व्यक्ति जब विचारों के उथल पुथल में हो तब उसे हृदय की बात माननी चाहिए।

(iii) चम्पारण क्षेत्र में बाढ़ का प्रमुख कारण जंगलों का कटना है। वन के वृक्ष जल राशि को अपनी जड़ों में थामे रहते हैं। नदियों को उन्मुक्त नवयौवना बनने से बचाते हैं। उत्ताल वृक्ष नदी की धाराओं की गति को भी संतुलित करने का काम करते हैं। यदि जलराशि नदी की सीमाओं से ज्यादा हो जाती है, तब बाढ़ आती ही हैं, लेकिन जब बीच में उनकी शक्तियों को ललकारने वाले ये गगनचुम्बी वन न हो तब नदियाँ प्रचंड कालिका रूप धारण कर लेती हैं। वृक्ष उस प्रचंडिका को रोकने वाले हैं। आज चंपारन में वृक्ष को काट कर कृषियुक्त समतल भूमि बना दी गई है। अब उन्मुक्त नवयौवना को रोकने वाला कोई न रहा, इसलिए अपनी ताकत का एहसास कराती हैं। लगता है मानो मानव के कर्मों पर अट्टाहास करने के लिए, उसे दंड देने के लिए नदी में भयानक बाढ़ आते हैं।

(iv) समाज में सर्वत्र भय का संचार है, लोग एक-दूसरे के प्रति ईर्ष्या-द्वेष से भरे हुए हैं। इस स्थिति में दूर पूर्ण स्वतंत्र, निर्भयतापूर्ण वातावरण बनाकर एक भिन्न समाज का निर्माण कर हम नूतन विश्व का निर्माण कर सकते हैं। हमें स्वतंत्रतापूर्ण वातावरण तैयार करना होगा जिसमें व्यक्ति अपने लिए सत्य की खोज कर सके मेधावी बन सके क्योंकि सत्य की खोज तो केवल वे ही कर सकते हैं जो सतत् इस विद्रोह की अवस्था में रह सकते हैं, वे नहीं, जो परंपराओं को स्वीकार करते हैं और उनका अनुकरण करते हैं। हमें सत्य, परमात्मा अथवा प्रेम तभी उपलब्ध हो सकते हैं जब हम अविच्छिन्न खोज करते हैं, सतत् निरीक्षण करते हैं और निरंतर सीखते हैं। इस तरह हमारे समाज में न ईर्ष्या-द्वेष और न भय का वातावरण रहेगा, मेधाशक्ति का पूर्ण उपयोग हो। स्वतंत्रतापूर्ण व्यक्ति जीवन जिएगा तो निसंदेह ही नूतन विश्व का निर्माण होगा।

(v) नारियों की उपेक्षा करते हुए अंग्रेज लेखक बर्नाड शॉ ने नारी को अहेरिन और नर को अहेर माना है अर्थात् नारी शिकार करना जानती है और उसका शिकार पुरुष है। उसका मानना है कि अहेर (पुरुष) को अहेरिन (नारी) से बच कर रहना चाहिए।

कुछ कवि तो बहुत नीचे के स्तर पर आकार नारी को 'नागिन' या 'जादूगरनी' समझते हैं।

नारियों के बारे में ऐसा कहना उचित नहीं है। जहाँ तक अंग्रेजी लेखक बर्नाड शॉ की बात है वे पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित थे। पश्चिमी सभ्यता ने नारी को उपभोग की वस्तु मान लिया है।

जहाँ तक नारियों को 'नागिन' या 'जादूगरनी' मानने की बात है, सर्वथा अनुचित हैं ये सब झूठ बातें हैं। पुरुषों के इस भाव में उनकी दुर्बलता का भाव छिपा है। वे ऐसा कह अपनी श्रेष्ठता कायम करना चाहते हैं। वास्तव में, विकार नारी में भी है और नर में भी। इतना ही नहीं, नाग और जादूगर के गुण भी नारी में कम, पुरुष में अधिक होते हैं। आखेट तो मुख्यतः पुरुष का ही स्वभाव है।

(vi) भगत सिंह के अनुसार कष्ट सहकर एक विशिष्ट और सर्वव्यापी आन्दोलन करना महान कार्य है विवृत्तियों, दुःखों, कष्टों और चिन्ताओं का सहन करते हुए देश के लिए शही दे जाना अर्थात् मृत्यु को वरण करना एक 'सुन्दर मृत्यु' है।

विपत्तियाँ मनुष्य को पूर्ण बनाने वाली होती हैं। उससे विचलित नहीं होना चाहिए। उन्हें धैर्यपूर्वक उस दिन की प्रतीक्षा करनी चाहिए जिस दिन हमारी कुर्बानी फलीभूत होगी। हमें शहादत को गले लगाना चाहिए। वह दिन हमारे लिए अत्यन्त गौरवशाली एवं महत्वपूर्ण होगा जिस दिन हमें मृत्युदण्ड दिया जाएगा। ऐसी 'मृत्यु' सुन्दर होगी।

आत्महत्या पलायनवाद है। यदि हम अपने संकल्प से विचलित हो जाते हैं अपने असफलताओं से निराश हो जाते हैं तथा आत्महत्य कर लेते हैं, तो यह हमारी कायरता कही जाएगी। भगत सिंह सदैव यही समझते थे कि वह बहुत कम समय के भीतर मर जाएँगे, क्योंकि स्वतंत्रता-संग्राम के संघर्ष में उन्होंने अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा झोंक दी थी, राष्ट्रभक्ति का जज्वा उनकी रग-रग में व्याप्त था। अतः उनका यह सोचना स्वाभाविक था कि उनकी मृत्यु कम समय में ही करने का सुझाव दिया। वे आत्महत्या कायर व्यक्तियों का कार्य मानते रहे। अतः उनके विचार में यदि हम मरने से डरते नहीं तो हँसते-हँसते देश-सेवा में शूली पर चढ़कर मृत्यु का वरण करना चाहिए, यही हमारा आदर्श आत्मोसर्ग होगा। भकत सिंह के शब्दों में– "विपत्तियों से बचने के लिए आत्महत्या कर लेने से जनता का मार्गदर्शन नहीं होगा। वरन् यह तो एक प्रतिक्रियावादी कार्य होगा।"

6. (i) शीर्षक—दुर्दशाग्रस्त भारत के ग्रामीण क्षेत्र

संक्षेपण—प्रेमचन्द ने दुनिया को क्या दिया-यह जिज्ञासा स्वाभाविक है। उनकी रचनाएँ सोचने-विचारने को विवश करतीं, कौतूहल जगातीं तथा मौलिकता की कसौटी पर भी खरी उतरती हैं। सचमुच विचार-अभिव्यक्ति की नवीनता ही ग्रंथ और ग्रंथकार को श्रेष्ठ बनाती है।

[कुल शब्द–117, संक्षेपित शब्द–39]

(ii) शीर्षक : परिश्रम का महत्व

संक्षेपण—छात्र जीवन के लिए परिश्रम एक अमोघ मंत्र है। हमें आलस्य से बच कर आगे बढ़ना चाहिए। हम किसी भी क्षेत्र में रहें, किसी भी कार्य में संलग्न रहें, परिश्रम को स्वीकार करना चाहिए।

[कुल शब्द–100, संक्षेपित शब्द–34]

❑❑❑